Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक नई चीज़

Purchased by the District and Municipal Boards Education Committees U. P. as Approved and enlisted
by
THE DIRFCTOR, PUBLIC INSTRUCTION
(United Provinces)
For Prizes, Libraries and Teachers use.

अनुवादक—
कविवर श्रीबलदेवदासजी माथुर चतुर्वेदी
रियासत रामपुर रुहेलखंड शाहाबादनिवासी

प्रचारक—
भगवानदास कैलासचन्द्र चतुर्वेदी
प्रकाशक—
नवलकिशोर-प्रेस, बुकडिपो, हज़रतगंज, लखनऊ.

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ओ३म्

ज्ञान प्रकाश

भूमिका

दोहा

श्री गुरु चरण सरोज की शुचि परागशिर लाय ।
करत पारसी ग्रन्थ की ब्रज भाषा सुखदाय ॥ १ ॥
जे पण्डित ज्ञानी गुनी जे आरिफ़ बुधिमान ।
ते समझैं या ग्रन्थ की बात महा सुखदान ॥ २ ॥
जिन नहिं जान्यो आतमा मानुष को तनु पाय ।
जीवत पशू समान ते अहङ्कार मन लाय ॥ ३ ॥
नाम अलाउद्दीन ते बड़े औलिया जान ।
मियां निज़ामुद्दीन के गुरू ज्ञान पद मान ॥ ४ ॥
तिन कीन्यो या ग्रन्थ कों इक इस ग़ज़ल बखान ।
द्वै से दस बैतें कही एक एक सुख दान ॥ ५ ॥
जिन पै श्री हरि गुरु कृपा कीनी अधिक बनाय ।
तिन लखि पायो आतमा मौन भये सुख पाय ॥ ६ ॥
मूड़ मुड़ावैं बहुत नर ढूँढ़त फिरत अनेक ।
तीरथ ब्रत बहुतक करैं बिरलो देखै एक ॥ ७ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जो देखै नित एक कों सब में सदा समान ।
सो पूरो साधू सुधी सो साहब विज्ञान ॥ ८ ॥
बन्दौं कबि जन सरलचित परहित अति सुखदाय ।
भूल चूक जो होय कछु लीजो समुझि बनाय ॥ ९ ॥
द्विज माथुर बलदेव कवि शाहाबाद सुधाम ।
ब्रज भाषा दीवान कहि ज्ञान प्रकाश सुनाम ॥ १० ॥
सम्बत एक हज़ार पुनि नौसे उनइस जानि ।
कातिक मास सु पक्षसित तेरस मङ्गल खानि ॥ ११ ॥

॥ छप्पै ॥

कोई कोट बनाय जीति जग भौंह चढ़ावै ॥
कोई ताल बनाय पुराय मारग दरसावै ॥
कोई श्री गोपाल देव मन्दिर बनवावत ॥
कोई बाग लगाय मिष्ट फल खात खवावत ॥
बलदेव सुकबि श्री हरि कृपा जीव बिबिध विधि जस लहैं ॥
त्यौं गुनीजनन के मोद हित कबि नवीन ग्रंथ न कहैं ॥ १ ॥

अन्यच्च

कहाँ सु वेद व्यास महाभारत जिन गायो ॥
कहाँ युधिष्ठिर भूप सुजस जिन को जग छायो ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कहाँ सु बिक्रम भोज सूर केशव सुखकारी ॥
कहाँ सु तुलसीदास कथा हरि बिशद उचारी ॥
बलदेव सुकबि जग स्वप्न सम नित्य सुजस जो पाइये ॥
यों समझि यथा मति गुनिन हित प्रेम कथा कछु गाइये ॥२॥

अन्यच्च

जगत कहानी घने जीव नित सुनैं सुनावैं ॥
पै विरले वे पुरुष चित्त आतम सों लावैं ॥
जग निन्दा को छोड़ि संग संतनु को कीजै ॥
श्री हरि गुरु की भक्ति माँझ निश्चै मन दीजै ॥
जब ह्वै प्रसन्न जगदीश हरि परम कृपा जा पर करैं ॥
तब लहै शुद्ध आतम अखिल जगत एक हरि चित धरैं॥३॥

अन्यच्च

धन्य धन्य गुरु देव भक्ति मारग दरसायो ।
श्री गीता को अर्थ कृपा कर आपु पढ़ायो ॥
धन्य धन्य सत संग ब्रह्म ज्ञानिन को भाई ॥
जिन की एकै बात सकल भ्रम भीर नशाई ॥
बलदेव सु कवि धनि ते पुरुष जे अपनों मन बस करैं ॥
पुनि जगत जान झूठो सकल एक आतमा चित धरैं ॥ ४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अन्यच्च

जिन पर श्री हरि कृपा सदा सत मारग धावैं ॥
जिन पर श्री हरि कृपा संग संतन को पावैं ॥
जिन पर श्री हरि कृपा सतोगुण चित्त सुलावें ॥
छोड़ि सकल भ्रम बाद एक श्री पति गुण गावैं ॥
बलदेव सुकबि बड़ भाग ते ज्ञान उदे आनँद लहैं ॥
तब सकल चराचर जीव को विश्वरूप दरशन कहैं ॥५॥

दोहा

श्री गीता को सार यह सकल उपनिषद सार ॥
कीनो श्रीमत भागवत श्री शुकमुनि निरधार ॥१२॥
सो भाष्यौ या ग्रंथ में जदपि पारसी माहि ॥
अपनो काम महूरव सों कछू रुख सों नाहि ॥१३॥
जानि स्वाद चुप हो रहैं निरखें श्री हरि रूप ॥
सब सों राखें प्रीति उर कहा रंक कह भूप ॥१४॥
ज्ञान बिना नहि मुक्ति है आज्ञा वेद सुजान ॥
बिना भक्ति भगवान की दुर्लभ जानो ज्ञान ॥१५॥
बिना कृपा गुरु देव की श्री हरि भक्ति न होय ॥
ज्ञान मोद चाहत लह्यो सेवो गुरु सब कोय ॥१६॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जब श्री गुरु की कृपा तें उपजे ब्रह्म ज्ञान ॥
तब चाहे जैसे रहो महा पुनीत बखान ॥१७॥

छप्पै

चाहो बैठि बजार करो ब्योपार सुभाई ॥
चाहो देखो नृत्य एक रूपहि मन लाई ॥
चाहो गज आरूढ़ होय नृप न्याउ सम्हारो ॥
चाहो कर बन बास एक आतम चितधारो ॥
बलदेव सुकबि आनन्द नित चित चाहे जित जाइये ॥
जगदीश कृपा गुरु भक्ति चित ब्रह्म ज्ञान तब पाइये ॥२३॥

अन्यञ्च

जाको ब्रह्म ज्ञान महा पावन तिहि मानो ॥
जाको ब्रह्म ज्ञान ब्रह्म मूरति कर जानो ॥
जाको ब्रह्म ज्ञान सकल तीरथ अंग ताके ॥
जाको ब्रह्म ज्ञान मनोरथ पूरन वाके ॥
बलदेव सुकबि पावन सु कुल जहाँ जहाँ वह पग धरे ॥
सो होय भूमि पावन परम दरस तासु मंगल करे ॥२४॥

॥ दोहा ॥

कहा इन्द्र पदवी कहो कहा भूमि को राज ॥
बिन जाने हरि आतमा सकल बंध को साज ॥२५॥

(इति भूमिका)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

छप्पै

राम कुमार उदार नित्य दीनन दुख हरता ॥
मग्न प्रेम में रहत भक्त मुद मंगल करता ॥
सुनत नित्य हरि कथा करत विप्रन को आदर ॥
बसत लक्ष्मा पुरी भारगेवबंश उजागर ॥
करत मान जिन कबिन को मनधन सों अति हरषचित ।
कैलाशचंद्र तिन के हृदय राम कृष्णजू बसहिं नित ॥

कवित्त

जैसी दृढ़ भक्ति नीकी सो है परमेश्वर में तैसी ही नज़रे इनायत खुदा करै ॥ राम के कुमार आस केवल श्री कृष्ण चन्द्र पूरन प्रकाश ज्योति हिय में जगा करै ॥ आपू हो दीर्घ सदा क़ायम इक़बाल रहैं कृष्ण की कृपा से जुदा व्याधिया खुदा करै ॥ बालकबि पुकार कहै गुरिायन की क़द्र करें दुश्मनान आप के का दफ़ैया खुदा करै ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अथ मामुकीमा का उल्था ज्ञान प्रकाश लिख्यते

ترجیع بند

ما مقیمان کوئے دلداریم — رخ بہ دنیا و دین نمی آریم
بلبلانیم کز قضا و قدر — اوفتادہ جدا ز گلزاریم
مرغ شاخ درخت لاہوتیم — گوہر درج گنج اسراریم
با امید عبیر خاک درش — فارغ از نافہائے تاتاریم
بندۂ بندگان مستانیم — خادم خادمان خماریم
غم او را بدل ہمی خواہیم — محنتش را بجان خریداریم
گوئیم او را بدل کہ یا ہو ہو — زانکہ پیوستہ ستر اظہاریم
تا مگر بار در گہش یابیم — ہر دم از دیدہ خون ہمی باریم
دیر گاہست کز بشارت غیب — ہر سحر مژدۂ ہمے داریم

॥ चौपाई ॥

मीत गली के हम हैं वासी । जग अरु धर्म सें रहें उदासी ॥
हरि आज्ञा के प्रेरितपच्छी । परे बिहाय बाटिका अच्छी ॥
बिहंग डारि निरगुन तरुकेरो । मोती भेद डबा घर मेरो ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ग्रासा रज द्वारे उनके री । नहिं ततार कस्तूरी हेरी ॥
मत्तन सेवक सेवक खासा । मद मत्तन के दासन दासा ॥
दुःख मीत को चितसें चाहों । प्रान देउँ तिहिं ग्रमहिं बिसाहों॥
चित सें कहों वही वह भासे । हम हीं से तिहिं भेद प्रकासे ॥
तो उन के घर पेठन पाऊं । स्वांस स्वांस दृग रक्त बहाऊं ॥
बहु दिन तें हरि प्रेरित बानी । नित प्रभात सुनियत सुखदानी ॥

چوپائی

میت گلی کے ہیں ہم باسی ۔ جگ اور دھرم سے رہیں اُداسی
ہر آگیا کے پریرت پنچھی ۔ پر رے بھائے بانکا اچھی
بھنگ ڈار نرگت ترکیرو ۔ موتی بھیہ ڈبا گھسمیرو
آسا رج دوارے اُنکیری ۔ نہیں تتار کستوری ہیری
متّن سیوک سیوک کھاسا ۔ مد متّن کے داسن داسا
دُکھ میت کو چت سیں چاہوں ۔ پران دیوُوں تہیں شر ہمیں بساہوں
چت سے کہوں وہی وہ بھاسے ۔ ہم ہیں سے تہیں بھید پرکاسے
تو اُن کے گھر پیٹھن پاؤں ۔ سوانس سوانس درگ رکت بہاؤں
بہو دن تیں ہر پریرت بانی ۔ نت پربھات سُنیت سکھ دانی

کہ بچشمان دل مبیں جز دوست ۔ ہر چہ بینی بداں کہ مظہر اوست
ہیی کی آنکھن سوں لکھو میت بنا نہیں کوئی ۔ جو کچھ آوت درشٹ میں بسوروپ ہر ہوئی

दोहा– हिय की ग्रांखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय॥
जो कुछ ग्रावत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

رُخِ تو غیرتِ گلستان است — لبِ تو رشکِ رنگ مرجان است
دلبرا سلطنت بجز شبوئی — بر سرِ لالہ عنبر افشان است
صفحۂ روئے تو آیتِ خال — عاشقاں را بجائے قرآن است
برگِ ریحاں ترا بہ نسرین است — گوے خوبی ترا بچوگان است
خط بہ لعلت وسیلۂ دارد — جائے طوطی بہ شکرستان است
بہ نشد دردم از علاجِ طبیب — یارب ایں درد را چہ درمان است
می نیارم زدن بوصفِ تو دم — وصفِ حسنت بروں زامکان است
تا شد از پیش دیدہ نقشِ رخت — دمبدم خوں زدیدہ باران است
بلبل شاخسار گلشن قدس — ایں سخن ہر صباح گویان است

मुख शोभा बन कुसम लजावे । मूंगा चहत अधर रंग पावे ॥
अलक कपोल सुगंध सुहाई । लाला पर अंबर छिरकाई ॥
सुन्दर मुख तिल राजत कैसो । बिन्दु मंत्र श्रुति पत्रहि जैसो ॥
नव कच मुख कपोल छबिखाने । गेंद भलाई तुव चौगाने ॥
अधर निकट नवकच छबिपाई । तूती मिसरी ढेर सुहाई ॥
पीर न घटी वैद्य पचहारे । है हरि को औषधि दुख टारे ॥
बरन सकों नहिं गुनन तिहारे । बाहिर सीमा रूप निहारे ॥
जब से तुब मुख छबि नहिं पाई । नैन रक्त वर्षा झरलाई ॥
पावन बाग़ डारि को पच्छी । बानी नित प्रभात कहि अच्छी ॥

مکھ شوبھا بن کسم لجاوے — مونگا چہت ادھر رنگ پاوے
الک کپول سوگندھ سوہائی — لالہ پر عنبر چھڑکائی
سُندر مکھ تل راجت کیسو — بندُ منتر شرت پتر ہی جیسو

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

نو نیج نکھ کیوڑ چھب کھانے — گیند بھلائی تب چوگانے
ادھر نکٹ تب نیچ چھب پائی — طوطی مصری ڈھیبنر سوہائی
پیر نہ گھٹی بید تیج ہارے — سبے ہر کو او کھد دکھ ٹارے
برن سکوں نہیں گُنن تہاری — باہر سیاں روپ نہاری
جب سے تب موکھ چھب نہیں پائی — نین رکت برکھا برکھائی
پاؤں باغ ڈار کو پنچھی — بانی نت پربھات کہہ اچھی

کہ بچشماں دل مبیں جز دوست — ہر چہ بینی بداں کہ مظہر اوست
ہیئی کی آنکھن سوں لکھو میت بنا نہیں کوئی — جو کچھ آوت درشٹ میں بسو روپ ہر ہوئی

दोहा – हियकी आंखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥
जो कुछ आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

بجہاں در ہمیشہ پیدائی — لیک در چشم من نمی آئی
اے کہ در ہیچ جا نداری جا — بوالعجب ماندہ ام کہ ہرجائی
در لباس دوئی نمی گنجی — زانکہ مشہور تر بہ یکتائی
روشن از آفتاب طلعت تو — چہرہ ہائے بتان یغمائی
از جمالت کہ بے مثال آمد — خرم آں دم کہ پردہ بکشائی
گاہ مستی و گاہ ہشیاری — گاہ پیری و گاہ برنائی
گاہ دُری و گاہ غواصی — گاہ موجی و گاہ دریائی
اندرون و برون از پس و پیش — در چپ و راست زیر و بالائی
دوش گویندہ ادا میکرد — از دل زار صوت شیدائی

जग में राजत सदाँ सुहाँये । हमरी दृष्टि न कबहूँ आये ॥
एक ठौर नहिं ठीक तिहारो । अचरज है सब ठौर निहारो ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

द्वैत भाव तुम में नहिं दरसे । प्रगट एक अद्वैत सरसे ॥
तब मुख रवि सब जगहिं प्रकासे । बहु सुरूप तुमहीं से भासे ॥
रूप अनंत तेज क्यों गाऊं । सुखी होउं तब दरसन पाऊं ॥
मादुकता कबहूं बुधिमानी । कबइं बुढापो कबहूं ज्वानी ॥
मोती कबहूं मरजियां जानो । लहर कहूं पुनि सिंधु सुमानो ॥
भीतर बाहि पीछे आगे । बाम सूध अधऊरध लागे ॥
काल रात कूकत एक प्रानी । आरति चित्त प्रेम मय वानी ॥

جگ میں راجت سداں سُوہائے — ہمری درشٹ نہ کبھوں آئے
ایک ٹھور نہیں ٹھیک تہارو — اَچرج ہے سب ٹھور نہارو
دویت بھاؤ تم میں نہیں درسے — پرگٹ ایک ادویت سرسے
تب مکھ رب سب جگنہ پرکاسے — بہو سُرُوپ تم ہی سی بھاسے
روپ انت تیج کیوں گاؤں — سکھی ہوں تب درشن پاؤں
مادکتا کبھوں بُدھ مانی — کبھوں بڑھاپو کبھوں جوانی
مُوتی کبھوں مرجیاں جانو — لہر کبھوں پُن سندھ سومانو
بھیتر باہر پیچھے آگے — بام سودھ ادھ اُوردہ لاگے
کال رات کوکت ایک پرانی — آرت چت پریم مَی بانی

کہ بچشانِ دل مبیں جز دوست — ہرچہ بینی بداں کہ مظہر اوست
ہیی کی آنکھن سوں لکھو میت بنا نہیں کوئی — جو کچھ آوت درشٹ میں بسو روپ ہر ہوئی

दोहा– हिय की आंखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ।
जो कुछ आवत दृष्टि नें विश्व रूप हरि होय ।

مشکبو نیست گوشہ گلزار — گوشہ نداہانہ باز گذار

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

عطر بیزست باد نوروزی — خلق را نیست حاجت عطار
چه عجب گر دریں چنیں ایام — بکنم سجده بر در خمار
بهر کشتم جبه دوتا رویه — خوشش در آیم بحلقهٔ زنار
گل ناراں که در خزاں میخواند — وقنا ربنا عذاب النار
هر دم از باد صبح بر آتش — طعنها میزنند بسے گلنار
از گل تازه عنبر افشان است — کوه و صحرا و کوچه و بازار
روشن ست از نظارهٔ نرگس — مردم دیدهٔ اولے الابصار
چوں به بستاں سرائے در رفتیم — می شنیدیم از در و دیوار

मृग मद गंध बाग में छाई । तज पाखंड कोन गृह भाई ॥
बसी सुगंध बसंत बियारी । जगत सुगंधी हाट बिसारी ॥
नहिं अचरज या समय मझारे । करों प्रनाम कलाल द्वारे ॥
छल को चोला दूर उतारों । ज्ञान जनेऊ कंठ सुधारों ॥
फूल अनार कहत पत भारे । पाप अग्नि से राख मुरारे ॥
ब्यार लागि अगनो सिर भारे । फूल अनार सु तानै मारे ॥
नव फूलन से महक अपारा । बसी गली गिरबन बाज़ारा ॥
तब नैनन के तेज प्रकाशे । सब ज्ञानिन के आंखिन भासे ॥
ऐसे बाग गये सुख खानी । भीति द्वार से सुनि यह बानी ॥

مرگ مد گندھ باگ میں چھائی — تج پاکھنڈ کون گرہ بھائی
بسی سوگندھ بسنت بیاری — جگت سوگندھی ہاٹ بساری
نہیں اچرج یا سمیں منجھارے — کروں پرنام کلال دوارے
چھل کو چولا دور اتاروں — گیان جنیو کنٹھ سودھاروں

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

پھول انار گنت پت جھارے　　پاپ اگن سی راکھ مرارے
بیار لاگ اگنی سر بھارے　　پھول انار سو طعنے مارے
نو پھولن سے مہک اپارا　　بسی گلی گر بن ما جارا
تب نینن کے تیج پرکاسے　　سب گیا نن کے آنکھن بھاسے
ایسے باگ گئے سکھ کھانی　　بھینت ددارے سُنی یہ بانی

کہ بچشمانِ دل مبیں جز دوست　　ہر چہ بینی بداں کہ مظہر اوست
ہئی کی آنکھن سوں لکھو میت بنا نہیں کوئی　　جو کچھ آوت درشٹ میں بسو روپ ہر ہوئی

दोहा— हिय की आखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥
जो कुछ आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

می رسد ایں ترانہ از ہر سو　　نغمہ لا الہ الا ہو
ناوک اندر کمان خود وارد　　شاہداں را بہانہ در ابرو
تا کند پنجہ با مبارز عشق　　عقل را نیست زور در بازو
جان من بے رخ تو فاختہ وار　　سالہا شد کہ می کند کو کو
سر بہ پیش تو می نہم ہر دم　　پیش بت سجدہ می کند ہندو
ای زموے تو دیدہا روشن　　دی زموے تو تا فہا خوشبو
دیدہ چوں چشم شیر گیر ترا　　بہ بیاباں نہادہ رخ آہو
زاہدا بگذر را دوئی و ... را　　در رہ عشق یک دل و یک رو
گر ترا گوش جاں نباشد کر　　بالیقیں بشنوی تو از ہر سو

सब दिशि सें सुनियत यह बानी । पूजनीय है वही सु आनी ॥
नावक सर कमान निजधारी । कर सुभ्रूमिसि प्रिय मनहारी ॥
प्रेम साथ पंजा जो करई । नहीं सामर्थ इती बुधि धरई ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुब दर्शन विन भयो परेवा । बरसन सें कू कू रट लेवा ॥
छिनि प्रति तुब आगे सिर धारी । मूरति आगे यथा पुजरी ॥
तब मुख सब के नैन प्रकाशे । कच सुगंध से मृग मद भाषे ॥
तुम्हरे नैन सिंह वशकारी । देखि हिरन भागे बन भारी ॥
पंडित छोड़ दुई इत आओ । प्रेम पंथ इक मुख चित लाओ ॥
जो न कान तुब बहरे प्रानी । नहि वे कर सुन चहुं दिशि बानी ॥

سب دِش سے سُنیت یہ بانی | پوجنی ہے وہی بکھانی
ناوک سُر کمان بچ دھاری | کرت سو جھ وس پری من ہاری
پریم ساتھ پنجہ جو کرائی | نہیں سامرتھ اتی بدھ دھرائی
تب درشن بن بھیو پریوا | برسن سیں کو کو رٹ لیوا
چھِن پرتی تب آگے سر دھاری | مورت آگے یتھا پوجاری
تب مکھ سب کے نین پرکاشے | کچ سوگندھ سے مرگ مد بھاشے
تمھرے نین سنگھ بش کاری | دیکھ ہرن بھاگے بن بھاری
پنڈت چھوڑ دوئی ات آؤ | پریم پنتھ ایک مکھ چت لاؤ
جو نہ کان تب بہرے پرانی | نہیں کر سُن چہوں دس بانی

که بچشمان دل مبین جز دوست | هر چه بینی بدان که مظهر اوست
ہی کی آنکھن سوں لکھو میت بنا نہیں کوئی | جو کچھ آوت درشٹ میں بشو روپ ہر ہوئی

दोहा– हिय की आंखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥
जो कुछ आवत द्रष्टि में विश्व रुप हरि होय ॥

باغ را مژده بهار آمد | نکهت نافه تتار آمد
هر طرف بانگ بلبلان برخاست | مرغ در مرغزار زار آمد

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

از شکنہائے طرۂ سنبل　　بوئے گیسوئے آں نگار آمد
چشمِ نرگس ز ساغرِ لالہ　　بادہ نا دیدہ در خمار آمد
صبحدم بر سرِ عروسِ چمن　　ابرِ نوروز دُر نثار آمد
چہرۂ گل بچشمِ غمناکاں　　چوں رُخِ یارِ غمگسار آمد
در گلستاں نسیمِ عنبر بو　　ہر سحر گاہ مشکبار آمد
سُرخ شد پای قمری از گلِ سُرخ　　زاغ را درد و دیدہ خار آمد
صوفیاں را بصد صفا می گفت　　نالہ کز دلِ ہزار آمد

मुद सुधि मधु जु बालने पाई । कस्तूरी ततार महकाई ॥
सब दिशि पक्षी बोल सुहाये । बन बिहंग बन रोवत आये ॥
तुर्रा सुम्बुल सुघर बंकाई । सुगंध अलक प्यारे की लाई ॥
नरगिस नैन कटोरा लाला । बन मद के रांते मतवाला ॥
प्रातसीस दुलहन फुलवारी । घन संवत सर मुक्ता वारी ॥
देखत फूल जबै बिरही जन । सुरति करत मुख मीत मुदितमन ॥
प्रात सुगंधित बाग सुबायू । सब दिशि मृग मदही महकायू ॥
फूल संग कुमरी पग लाले । काग दृष्टि कंटक ज्यों साले ॥
ज्ञानिन सों अति साफ़ बखानी । बुलबुल चितसों निकसी बानी ॥

مد سودھی مدھو جو بالک نے پائی　　کستوری تتار مہکائی
سب دِس پنچھی بول سوہائے　　بن بہنگ بن رُووت آئے
طرہ سنبل سگھر بنکائی　　سُوگندہ الک پیارے کی لائی
نرگس نین کٹورا لالہ　　بن مد کے راتے متوالا
پرات سیس دولہن پھلواری　　گھن سمبت سر مکتا واری

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

دیکھت پھول جیے برہی جن | سُرت کرت کھ میت مدت من
پرات سوگندھت باگ سوہایو | سب دِش مرگ مدھی مہکایو
پھول سنگ قمری پک لائے | کاگ درشٹ کنٹک جیوں سالے
گیانن سون اُت صاف بکھانی | بلبل چت سون نکسی بانی

کہ بچشمانِ دل مبیں جز دوست | ہر چہ بینی بداں کہ مظہر اوست
ہِیے کی آنکھن سوں لکھو میت بنا نہیں کوئی | جو کچھ آوت درشٹ میں سبہ روپ ہر ہوئی

दोहा-हिय की आँखिन सों लखौ मीत बिना नहिं कोय ॥
जो कुछ आवद दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

ہر کہ وصف نگار میگوید | سخن آبدار میگوید
پیرِ ما ستر عالمِ مستی | بادل ہوشیار میگوید
خطِ او را خرد ثنا دانی | باز مشکِ تتار میگوید
ہر سحر گہ نسیمِ نوروزی | خبرِ زلفِ یار میگوید
باغباں پیشِ گل بہ موسمِ گل | گلۂ نوکِ خار میگوید
بلبل اندر خزاں بشاخِ کہن | قصۂ نوبہار میگوید
سرو در باغِ وصفِ بالائش | از سرِ انکسار میگوید
چوں کشم زلف عنبرینش را | ہر کسے مار مار میگوید
مرغ دستاں سرائے روضۂ راز | صبحدم زار زار میگوید

जो कोई गुन प्यारे के गावे । बात भली आनंद उपजावे ॥
गुरु हमार भेद हरि राखे । मत्त होय ज्ञानी सों भाखे ॥
उहि मुरख कच कों बुधि भ्रम खाई । फेर कहत मृग मद महकाई ॥
प्रात समय की वायु बसंती । अलक मीत की सुधि दरसंती ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

फूलन सों बसंत में माली । कंटक पीर कहत हियसाली ॥
पच्छी कहत समय पत झारी । बृक्ष डारि सों कथा बहारी ॥
सरो बृक्ष तिहि करत बड़ाई । आप दीनता प्रगट दिखाई ॥
मेहकत अलक गह्यों में भाई । लोग कहत नागहि समताई ॥
कुक-कुट भेद बाग को जानी । प्रात नैन भर उचरत बानी ॥

جو کوئی گن پیارے کی گاوے — بات بھی آنند اوپجاوے
گرو ہمار بھید ہر را کھے — مست ہوئی گیانی سوں بھاکھے
دہی گھر کچ کون بدھ بکرم کھائی — پھر کہت مرگ مد مہکائی
پرات سمے کی باد بسنتی — الک میت کی سُدھ در سنتی
پھولن سوں بسنت میں مالی — کنٹک پیر کہت ہیہ سالی
پچھی کہت سمیں پت جھاری — برچھ ڈار سوں کتھا بہاری
سروں برچھ تہی کرت بڑائی — آپ دینتا پرگٹ دکھائی
مہکت الک گہوں ہیں بھائی — لوگ کہت ناگہہ سمتائی
کوکٹ بھید باگ کو گیانی — پرات نین بھر اوچرت بانی

کہ بچشمانِ دل مبین جز دوست — ہرچہ بینی بداں کہ مظہر اوست
ہے کی آنکھن سوں کھو میت بنا نہیں کوئی — جو کچھ آوت درشٹ میں وشو روپ ہر ہوئی

दोहा- हिय की आंखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥
जो कछु आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

ای ز مہر تو عالمی غمناک — جان ہر یک فتادہ در تاباک
بر جمال و جلال چہرۂ تو — ہمہ را گو رویدہ ادراک
شہسوار است عشق گر نہ بپیش — نشود رام توسن اشراک

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

نهند پا بکوچهٔ باطل — هر که در راهِ حق بود چالاک
زهر نوشندگانِ جامِ غمت — می نخواهند از کسے تریاک
ترکِ عشقِ تو عاشقانت را — می کشد از کسے ندارد باک
آه من سوخت استخوان مرا — آتشے زد بخرمن خاشاک
خنجرِ عشق یار بار دگر — میکند سینه هاے یاراں چاک
بشنوی از زبان هر موجود — ساعتے گر زغیر گردی پاک

प्यारे तुम को सब जग चाहै । तरपत सब को चित सदा है ॥
रूप बड़ाई मुख को जानै । दृष्टि समझ की आंधी मानैं ॥
ऐसो भीम प्रेम असवारा । सेवक होत अश्व शिशु मारा ॥
छूटे मग पग कबहूँ न धारे । जो हरि मारग चलने हारे ॥
तुब बियोग विष जिह मुख लागे । काहूं सों अमृत नहिं मांगे ॥
प्रेमिन कों तुब प्रेम सिपाई । मारत काहू सों न डराई
बिरह अगिन मम हाड़ जराए । गरी फूंस ज्यों अगनी पाये ॥
बारम्बार जु प्रीत कटारी । लगत हिये प्रेमिन के मारी ॥
हर इक विद्यमान सुन बानी । चढ़ी एक तजि और कहानी ॥

پیارے تم کو سب جگ چاہے — ترپت سب کو چت سدا ہے
روپ بڑائی مکھ کو جانے — درشٹ سمجھ کی آندھی مانے
ایسو بھیم پریم اسوارا — سیوک ہوت اَشو شش مارا
چھوٹے مگ پگ کبھوں نہ دھارے — جو ہر مارگ چلنے ہارے
تب بیوگ بکھ جی مکھ لاگے — کاہو سوں اَمرت نہیں مانگے
پریمن کو تب پریم سپائی — مارت کاہو سوں نہ ڈرائی

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

بره اگن تن ہاڑ جرائے   گری پتنگ جیوں اگنی پائے
بارم بار جو پریت کٹاری   لگت ہیہ پر مین کے بھاری
ہر ایک بدمان سن بانی   گھڑی ایک تج اور کہانی

کہ بچشمان دل مبیں جز دوست   ہر چہ بینی بداں کہ مظہر اوست
ہیے کی آنکھن سوں لکھ پیت بنا نہیں کوئی   جو کچھ آوت درشٹ میں بشو روپ ہر ہوئی

दोहा— हिय की आंखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥
जो कुछ आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

گر خوری جرعۂ ز ساغر غم   جام جمشید را زنی بر ہم
تاکہ شادی ہمی دہند بباد   مالکان بلاد غم در دم
گریہ در یاد را دہند بوجد   رشتۂ دلق شاں نگردد نم
دردمندان زخم تیغ فراق   می نخواہند از کسے مرہم
برتریں عالمیست گر دانی   عاشقاں را بروں ازیں عالم
چوں بخود خویش را حرام کنی   حرم عشق را شوی محرم
تا ندارد بلا گریبانت   دامن عیش را نگیری کم
گر بجوئی صفات ذات خدا   نظرے کن بمظہر آدم
ساز عشق ار بچنگ در گیری   بشنوی از نوائے نالۂ ہم

प्रेम घूंट इक कंठ उतारे । जमशेदी प्यालो सिरमारे ॥
सकल देस सुख छिन में त्यागे । प्रेम दुःरत मन जिन के लागे ॥
प्रेम मगन औ जल गिर जाहीं । गुदरी धागा भीजै ना हीं ॥
बिरहा खड़ग घाउ दुख लागे । किहुं से सो मल्हम नहिं मांगे ॥
सब से ऊंचे पद सुख लूटे । या जग सें प्रेमी जब छूटे ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जबै अपन को आप गंवावे । प्रेम भवन के भेद हि पावे ॥
जौलों दुःख न अंचल फारे । तौलों हू हरि मिलन न धारे ॥
जो ढूंढत गुन हरि के भाई । मानुष तन निरखो मन लाई ॥
बाजो प्रेम लेउ कर ज्ञानी । सुन सब दिशि अनहद यह बानी

پریم گھونٹ ایک کنٹھ اوتارو ۔ جمشیدی پیالہ کو تل ہارو
سکل دیس سکھ چھن میں تیاگے ۔ پریم دکھ من جن کے لاگے
پریم مگن جو جل گر جاہیں ۔ گدڑی دھاگا بیچے ناہیں
برہا کھڑک گھاؤ دکھ لاگے ۔ کیہوں سے سو تھم نہیں مانگے
سب سے اونچے پد سکھ لوٹے ۔ یا جگ سے پریمی جب چھوٹے
جبھی اپن پو آپ گماوے ۔ پریم بھون کے بھید ہی پاوے
جو لوں دکھ نہ آنچل پھاڑے ۔ تو لوہوں ہر ملن نہ دھارے
جو ڈھونڈت گن ہر کے بھائی ۔ مانکھہ تن نرکھو من لائی
باجو پریم لیو کر گیانی ۔ سن سب دس انہد یہ بانی

که بچشمانِ دل مبیں جز دوست ۔ ہرچہ بینی بداں کہ مظہر اوست
ہیے کی آنکھن سوں لکھو میت بنا نہیں کوئی ۔ جو کچھ آوت درشٹ میں بستو روپ ہر ہوئی

दोहा — हिय की आंखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥
जो कुछ आवत दृष्टि में विष्णु रूप हरि होय ॥

از غم و درد گریبانی تنگ ۔ دامنِ شادی آری اندر چنگ
در مقامات منزلِ جاناں ۔ جان من کے زنی بر رگ سنگ
گر خوری جرعۂ ملامت را ۔ شیشۂ ننگ را زنی بر سنگ
بر بساطِ بلا بسم بازی ۔ راست بازاں نمیکنند درنگ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

اول از پردهٔ خودی بدر آیے   بعد ازاں کن براہ عشق آہنگ
گر بہ بیند نگار خانۂ عشق   مانی از خود نہاں کند از ننگ
عشق خونریز دشنہ ایست کزو   کفنِ کشتگاں نیابد رنگ
او فتادیم در بیابانے   بیکس و باکسے نہ صلح ونہ جنگ
کلماتے بروں نمی آید   غیر ازیں از دہان وحشی دلتنگ

जो दुख प्रेम पंथ सहिजै हो। सुख को अंचल हाथ सो लैहो
दूर धाम पीतम क्यों पैहो। लंगड़े घोड़े किन चढ़ जैहो ॥
निन्दा घूंट पियोगे जब ही। तजि हो लाज लोक की तब ही॥
संकट खेल जु सिर बदि खेले। सांचे प्रेमी देर न मेले ॥
अहंकार पहले तज दीजै। पीछे प्रेम पंथ पग दीजै ॥
प्रेम भवन शोभा लखि पावै। मानी अपनो मान गमावै ॥
प्रेम कटार लगे उर जिनके। अंबर अंत रँगे नहिं तिनके॥
मैं हों दीन वास बन मेरा। काहू सों न मेल नहि बेरा ॥
और बात मुख से नहिं आवै। बनचर चीतो यही सुनावै ॥

جو دکھ پریم پنتھ سہی جیہو   سکھ کو انچل ہاتھ سو لیہو
دور دھام پیتم کیوں پیہو   لنگڑے گھوڑے کن چڑھ جیہو
نندا گھونٹ پیوگے جب ہیں   تج ہو لاج لوک کی تب ہیں
سنکٹ کھیل جو سر بد کھیلے   سانچے پریمی دیر نہ میلے
اہنکار پہلے تج دیجے   پیچھے پریم پنتھ پگ دیجے
پریم بھون سوبھا لکھ پاوے   مانی اپنو مان گماوے
پریم کٹار لگے اُور جنکے   انبر انت رنگے نہیں تنکے

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

میں ہوں وین باس بن میرا ۔ کاہو سون نہ میل نہیں ہیرا
اور بات کچھ سوں نہیں آوے ۔ بچنہ چیتو یہی سناوے

کہ بچشمانِ دل مبیں جز دوست ۔ ہر چہ بینی بداں کہ مظہر اوست
ہے کی آنکھن سون لکھ میت بنا نہیں کوئی ۔ جو کچھ آوت درشٹ میں بشو روپ ہر ہوئی

दोहा – हिय की आँखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥
जो कछु आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

یار با شیشۂ شراب رسید ۔ راحت اندر دلِ خراب رسید
ماہرویاں برخ نقاب کشند ۔ بیں کہ آں شوخ بے نقاب رسید
دلِ من رفت سوئے مژگانش ۔ گوئیا سیخ را کباب رسید
چوں نظر کرد گل برخسارش ۔ از حیا بر رخش گلاب رسید
پیرِ ما عشق آں جواں دارد ۔ ایں حکایت بشیخ و شاب رسید
ترک من بہرِ کشتنم با تیغ ۔ بر سرم از پئے صواب رسید
زانکہ قربانِ تیر و ترکش او ۔ یارم از خانہ بے حجاب رسید
بر دلش داغ آتشیں بنہاد ۔ آہِ من چوں بماہتاب رسید
چوں رہ عقل را خطا کردم ۔ من دیوانہ را خطاب رسید

मीत जु मद भाजन लै आयो । दुखित चित में आनँद पायो ॥
चंद्र मुखी मुख अंचल लाये । देखि निडर मुख खोले आये ॥
बरुनी देखत मो मन गयो । मुँज आमिष सलाक रहिगयो ॥
फूल गुलाब कपोल निहारे । लागी लाज प्रस्वेद सुधारे ॥
कहत गुरु मेरो बात रुनहिं । वृद्ध युवा या कथाहि वरनहिं ॥
प्रीतम मम सिर लिये कटारी । मारन कांज पुन्य हितकारी ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

न्यौछावर सर निरखंग सुहायो। लाज बिना घर से पिय आयो
अगिन वाग वाके उर दरसे । हाय शब्द मम शस्त्रि जो परसे ॥
त्यागी राह बुद्धि मन मानी। मो सिर्री सों कही सु वानी ॥

بیت جو ہو بھا جن لے آیو — دو ٹھٹ پچھتا ہیں آنسو بہایو
چندر مکھی مکھ انچل لائے — دیکھ نڈر مکھ کھولے آئے
بُرونی دیکھن موہن گیو — بھوج آ مکھ سلاک رہ گیو
پھول گلاب کپول تہارے — لاگی لاج پر سنوید سو دھارے
چاہت گرد میرو با ترسے — بدن جو پایا کتھا ہی برسے
پریتم ہم سر لیے کٹاری — مارن کاج پن ہنکاری
نیو چھاور سر نکھنگ سوہایو — لاج بنا گھر سے پیو آیو
اگن واگ واکے اُر درسے — ہائے شبد مم شسترا جو پرسے
تیاگی راہ بدھ من مانی — سری سوں کہی سو بانی

کہ بچشمان دل مبیں جز دوست — ہر چہ بینی بداں کہ مظہر اوست
سبھی کی انکھن سوں کچھ دیکھت بنا نہیں کوئی — جو کچھ آوے درشٹ میں بشو روپ ہر ہوئی

दोहा – हिय की आँखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय
जो कछु आवत द्रष्टि में बिश्व रूप हरि होय ॥

در بیابان درد حیرانیم — راہ شہر دوا نمیدانیم
اوفتادیم در قفس ناگاہ — می ندانیم تا چہ مرغانیم
گہ خرابیم وگاہ معموریم — گہ اسیریم وگاہ دربانیم
گہ جہودیم وگاہ زناریم — گاہ ترسا وگہ مسلمانیم
گہ طبیبیم وگاہ بیماریم — گاہ دردیم وگاہ درمانیم

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

گاه صوفی و گاه رقاصیم   گاه گریان و گاه خندانیم
گاه منظور چشم عشاقیم   گاه ناظر بروی خوبانیم
گر هندوستان شدیم چه باک   بلبل گلشن خراسانیم
تا بیاموختیم ابجد عشق   رقمی غیر ازین نمیدانیم

परे दुःख बन भ्रम मत मानो । बाट नगर औषधि नहिं जानो ॥
अकस्मात पिंजरहिं फसाते । को पक्षी हैं हम नहिं जाने ॥
कबहूँ अजड़ कबहूँ बसे हैं । राजा पुनि पहरू दरसे हैं ॥
कबहूँ पारसी दुजबर कबहूँ । तरसा कहूँ मुसल्माँ कबहूँ ॥
कहूँ बैद्य रोगी कहूँ जानो । कबहूँ पीर औषधि कहूँ मानो ॥
कहूँ साधु कहूँ नाचन हारे । कहुँ रोवत कहूँ हंसत सुधारे ॥
कबहूँ प्रेमति के दृग बासी । कबहूँ लखत रूप की रासी ॥
हिन्द बसे कछु डर न हानि को । बिहंग बाटिका खुरासान को
ओलम सिखी प्रेम की जब तें । अक्षर और न जानत तब तें ॥

پری دکھ بن بھرم من مانو   باٹ نگر اوکھد نہیں جانو
اکسمات پنجرہ پھسانے   کو پچھی ہیں ہم نہیں جانے
کبھوں اوجڑ کبھوں بسے ہیں   راجا پن پہرو درسے ہیں
کبھوں پارسی دوج بر کبھوں   ترسا کبھوں مسلماں کبھوں
کبھوں بید روگن کبھوں جانو   کبھوں پیر اوکھد کبھوں مانو
کبھوں سادھو کبھوں ناچن ہارے   کبھوں رووت کبھوں ہنست سوہارے
کبھوں پریمین کے درگ باسی   کبھوں لکھت روپ کی راسی
ہند بسے کچھ ڈر نہ ہان کو   بہنگ باٹکا خراسان کو

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

اودھم سکھی پریم کی جب تیں	اچھر اور نہ جانت تب تیں
کہ بچشمانِ دل مبیں جز دوست	ہر چہ بینی بداں کہ مظہر اوست
ہے کی نس آنکھن سوں لکھو بیت بنا نہیں کوئی	جو کچھ آوت درشٹ میں استو روپ ہر ہوئی

दोहा—हिय की आंखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥
जो कुछ आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

ہر کہ را دیدہ شد بروئے تو باز	آید از عشق خوبرویاں باز
وانکہ از جام عشق شد مدہوش	ہیچگاہی بہوشش نامد باز
گر بخواہی کہ بینیش ہر روز	دیدہا راز غیر او چوں باز
حرف درماں ز لوح سینہ بشوی	نامہ درد چوں کنی آغاز
از دل و جاں نثار ناوک دوست	جاں فدا میکنند اہل نیاز
گر بجویند باز دریا بشد	دل محمود را بزلف ایاز
چوں نظر میکنم بنقش رخت	پرتو حق بہ بینم اندر باز
دوش خود را بخواب میدیدم	پیش دولت سرائے صفا راز
بر زدم تختہ درش ناگاہ	از درونش بر آمد ایں آواز

जा काहू तुव मुख लखि पायो । रूपवंत को प्रेम भुलायो ॥
प्याली प्रेम छके मद पाये । ते कबहूं नहिं संगिया लाये ॥
जो चाहत पिय दृग सीं राखो । ज्यों सचान ओर न अभिलाखो
हिय से सब उपचार बिसारो । दुःख सीख तब उर में धारो ॥
उहि नावक पर तन मन वारो । करत प्राण नौछावर प्यारो ॥
जिन ढूंढो पायो चित कूदहि । अलक अयाज़+ चित्त महमूदहि+

+महमूद ग़ज़नी का बादशाह था जिसने हिन्दुस्तान पर हमले किये और +अयाज़ उसका गुलाम और माशूक था ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जो तुव मुख की छबि में पेखों । ब्रह्म रूप फिर घट में देखों ॥
काल रात सपने दृग लागे । आप हि लख ज्ञानी ग्रह आगे ॥
कर कपाट वाके पै मारे । भीतर से यह बचन उचारे ॥

جا کا ہتو تب لکھ پایو   روپ ونت کو پریم بھولایو
پیالو پریم چھکے مد پاۓ   پی کبھوں نہیں سنگیاں لاۓ
جو چاہت پی درگ سیں راکھو   جیوں سجان اورن ابھلاکھو
رہے سے سب اوچار بسارو   دو دکھ سکھ تب اور میں دھارو
وہ ناوک پر تن من مارو   کرت پران نوچھاور پیارو
جن ڈھونڈو پایو چت کو دھی   الک[1] ایاز چت محمود ھی
جو تب مکھ کی چھب میں پیکھوں   براہم روپ پھر گھٹ میں دیکھوں
کال رات سپنے درگ لاگے   آپ ہی لکھ گیانی گرہ آگے
کر کپاٹ واکے پے مارے   بھیتر سے یہ بچن اچارے
کہ نگہبان دل میں جز دوست   ہر چہ بینی بداں کہ مظہر اوست
ہیے کی آنکھن سوں لکھو میت بنا نہیں کوئی   جو کچھ آوت درشٹ میں بسو روپ ہری ہوئی

दोहा- हिय की आंखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥
जो कछु आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

ای دل دوستاں بروے تو شاد   خانۂ شادی از رخت آباد
گر نہ بیند لبان شیرینت   نقش شیریں ز دل کند فرہاد
ہر گز از بندگیت سر نکشد   در جہاں ہیچ بندۂ آزاد
مادر دہر چوں تو فرزندے   از ازل تا ابد ندید و نہ زاد
گر قبولم کنی و گر مردود   نتوانم زدن دم ایراد

[1] محمود غزنین کا بادشاہ تھا جس نے ہندوستان پر حملے کئے اور ایاز اُس کا غلام اور معشوق تھا ۱۲

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

شحنهٔ عشق تو بکاکلِ دلم — می فزاید زحد برون بیداد
پیش محرابِ طاقِ ابرویت — سروری نیست آنکه سر ننهاد
دی بدیوانِ عشق در رفتم — تا زنا و یدنت کنم فریاد
همدران دم سروش فرخ زاد — الرسر لطف این ندا در داد

तुव मुख देखें प्रीत सुखारी । तुव मुख जग को मंगलकारी ॥
तुम्हरे अधरामृत लखि पावे । शीरीं को फ़रहाद भुलावे ॥
जा को तुम्हरी भक्ति न होई । जग स्वतंत्र सेवक नहिं कोई ॥
तुम सो सुत जग मात न जायो । आदि अंत लौं दृष्टि न आयो ॥
चाहे अपनावें, चा त्यागे । बोल सकों नहिं अधिक सुआगे ॥
मन मल देस प्रेम कुतवाला । करत अतोल अनीत बिहाला ॥
तुम्हरी भूवां की लखि नाथा । को राजा नहिं नायो माथा ॥
काल गयो जु प्रेम दरबारा । बिन देखे की करों पुकारा ॥
तबही जबराईल बधाई । कृपा दृष्टि यह टेर सुनाई ॥

تب مکھ دیکھے پیت سکھاری — تب مکھ جگ کو منگل کاری
تمہرے ادھر امرت لکھ پاوے — شیریں کو فرہاد بھولاوے
جا کو تمہری بھگت نہ ہوئی — جگ سوتنتر سیوک نہیں کوئی
تم سو ست جگ مات نہ جایو — آد انت لوں درشٹ نہ آیو

+ फ़रहाद शीरीं पर आशिक़ था उसने पत्थर में बसूले से नहर मुलाक़ात की शर्त पर निकाली थी - माशूक़ के मरने पर बसूला मार कर मरगया ॥

+ जबराईल खुदा का फ़रिश्ता है जो पैग़म्बरो के पास खुदा का पैग़ाम लाता है

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

بچا ہے اپنا وے یا تیاگے — بول سکوں نہیں او ہکسو آگے
ہم من دیس پریم گتوالا — گرُت اُٹل اَنیت ہمالا
تمہری بھرو بانکی لکھنا تھا — گرُ لاجیا نہیں نا یو با تھا
کال گیہ جہ پریم ڈر بارا — بن دیکھے کی کروں پکارا
تب پایا جبرائیل[۱] بڑہائی — کرپا درشٹ یہ ٹیر سنائی

کہ بچشمان دل مبیں جز دوست — ہر چہ بینی بداں کہ مظہر اوست
ہیے کی ہم آنکھن سوں لکھیت بنا نہیں کوئی — جو کچھ آوت درشٹ میں بستو روپ ہر ہوئی

दोहा — हिय की आँखिन सों लखौ मीत बिना नहिं कोय ॥
जो कछु आवत दृष्टि में विष्णु रूप हरि होय ॥

قصہ عاشقانہ میگوئیم — نہ بہ ہر یک فسانہ میگوئیم
رمز فقر و یگانگی بہ نیاز — بہ فقیر و یگانہ میگوئیم
روز و شب ہر زلف و روی نگار — وصف مرآت و شانہ میگوئیم
سخنان زمانہ عند اللہ — ہم باہل زمانہ میگوئیم
در دیوانگی ہمی گوئیم — عاقلی را بہانہ میگوئیم
ساغر لالہ دیدہ ام بچمن — زاں حدیث چمانہ میگوئیم
چوں لب و زلف و خال را دیدم — شکر و دام و دانہ میگوئیم
خبر خواری از خرابی دہر — بیخوداں را بہانہ میگوئیم
چونکہ واقف شدم ز پردہ راز — و بہ بدم ایں ترانہ میگوئیم

प्रेम भरी मैं कथा सुनाऊँ । जगत कहानी सी नहिं गाऊँ ॥
भेद ज्ञान अद्वैत भारे । कहौं साधु ज्ञानी सों न्यारे ॥
सदा अलक मुख प्रीतम काजे । हम दरपन कंघी जस साजे ॥

[۱] جبرئیل ایک فرشتہ کا نام ہے جو پیغمبروں پر خدا کا فرمان لاتا ہے —

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बातें कुटिल जगत की जैसी । जग प्रानिन सों बरतों तैसी ॥
प्रेम सिरि को सीस सुधारों । जगत बुद्धि को सिर पुकारों ॥
प्यालो लाला लखि फुलवारी । तासें मद की बात उचारी ॥
अधर अलक तिल छबि लखि पाई । अमृत जाल चुगो कहि गाई ॥
कुगति निरखि जग की घबराऊं । अज्ञानिन सों बात बनाऊं ॥
जब भीतर के भेद हि पाऊं । बार बार यह गाय सुनाऊं ॥

پریم بھری میں کتھا سناؤں   جگت کہانی سی نہیں گاؤں
بھید گیان او وے تے بھارے   کہوں سادھو گیانی سوں نیارے
سدا ان اکھ مکھ پریتم کا سجے   ہم درپن کنگھی جبس ساجے
باتیں کوٹل جگت کی جیسے   جگ پرانن سوں برتوں تیسے
پریم سِر کو سیس سدھاروں   جگت بدھ کو سِر پکاروں
پیالو لالہ لکھ پھلواری   تاسیں مد کی بات اوچاری
ادہر الک تل چھب لکھ پائی   امرت جال چگو کہہ گائی
کوگت نرکھ جگ کی گھبراؤں   اگیانن سوں بات بناؤں
جب بھیتر کے بھید ہی پاؤں   بار بار یہ گائے سناؤں

کہ بچشمانِ دل مبیں جز دوست   ہر چہ بینی بدان کہ مظہر اوست
ہیے کی آنکھن سوں لکھو میت بنا نہیں کوئی   جو کچھ آوت درشٹ میں بشو روپ ہر ہوئی

दोहा-- हिय की आंखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥
जो कुछ आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

ای رخت نور دیدہ عشاق   وی درت قبلہ گاہ ہر مشتاق
تو بخوبی بتا نداری جفت   زانکہ ہستی بخوبروئی طاق

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

دلبران گرچه دلبرند ولیک | از همه دلبری علی الاطلاق
زهر نوشندگان جام غمت | می نخواهند از کسی تریاق
دل عشاق ساخته است هدف | تیر چشم بتان سیمین ساق
دیگران میکشند ساغر وصل | ما غم هجران مدام درد فراق
مستحق بلا و اندوهیم | عاشقان را بلاست استحقاق
از عراقی صد آفرین شنود | سخنم گر کسی برد بعراق
مخبران دیار عالم عشق | این خبر میدهند در آفاق

तुव मुख प्रेमिन नेन प्रकासी । तुव दर तीरथ चांहकरासी ॥
तुमसो सुन्दर और न होई । रूप अनन्य कहे सब कोई ॥
रूप मनोहर बहु जग माहीं । शोभा में तुव समता नाहीं ॥
तुव वियोग विष प्याल्लो चारवें । ते नहीं आस औषधी रारवें
मन प्रेमिन को लक्ष अनूपा । दृग सर भिदा पिंडरी ज्यों रूपा
और सबै मिल दरशन पावें । हम वियोग के दुःख उठावें ॥
हमरे भाग सु संकट दीनो । प्रेमिन दुरव नेग करि लीनो ॥
साधु इराक प्रसंसा गावें । कोइ शुभ बगदादेश सुनावें ॥
प्रेम देश के भेदी प्यारे । चहुं ओर बहु बचन उचारे ॥

تب مکھ پریمن نین پرکاسی | تب در تیرتھ چاہت راسی
تم سو سندر اور نہ ہوئی | روپ انینہ کہے سب کوئی
روپ منوہر بہو جگ ماہیں | سوبھا میں تب سمتا ناہیں
تب بیوگ بکھ پیالو چاکھیں | تے نہیں آس اوکھدی راکھیں
من پریمن کو لکچھ انوپا | درگ سر بھی پنڈری جیوں روپا

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

اور سبھی بل درشن پا دیں — ہم بیوگ کے دکھ اٹھا دیں

ہمرے بھاگ سو سنکٹ دینو — پر ہیں دُکھ نیگس کر لینو

سادھو عراق پر سنا گاوے — کوئی ہم بچ یا دیس سناوے

پریم دیس کے بھیدی پیارے — پھولوں اور یہ بچن اُچارے

کہ بچشمانِ دل مبین جز دوست — ہر چہ بینی بداں کہ مظہر اوست

ہے کی آنکھن سوں لکھو میت بنا نہیں کوئی — جو کچھ آوت درشٹ میں بسوروپ ہر ہوئی

दोहा-- हिय की आंखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥

जो कछु आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

تازہ شد بوستان موسم گل — داروئے درد سینۂ بلبل

سید بہ نافہ ہائے چیں بر باد — نکہت چین طرۂ سنبل

برگہائے گل از پئے خوباں — بستہ بر چشمہائے بستاں پل

باغباں بر سمند باغ انداخت — دیگر از حلۂ زیبا چیں جُل

نظرے کن بہ نرگس مخمور — کہ بیکبار مست شد بی گُل

از دم قولِ بلبلانِ سحر — بر شد از شیشہ نعرۂ قلقل

باز وداج را بہ صحن چمن — از گل لالہ سرخ شد چنگل

من مخمور در چنیں روزے — سر فرو بردہ بودم از سر ذل

از پئے آنکہ چوں شوم واصل — ناگہاں ایں شنیدم از صلصل

रितु बसंत छबि ले फुलवारी । बुलबुल उरखत औ बधि भारी

दृग मद चीन बिदर कर डारी । कुटिल सुगंधित अलक बुमारी ॥

पत्र फूल ले तुब हित प्यारे । बांधे सेत बाग़ के तारे ॥

मालिन बाग़ अस्व पै डारे । पुष्प रंग बहु भूल सुधारे ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देख भरे मद नरगिस कैसे । बिन आसव मद माते जैसे ॥
प्रात समय सुन बुलबुल बानी। मद भाजन मुख शब्द सुआनी
तीतर बाज़ बाग़ रंग भीने । पंजा लाल फूल संग कीने ॥
मैं मद मातो तादिन भाई । पिय वियोग बैठो सिर नाई ॥
क्योंकर मिले मीत मन भायो । तहीं परेवा बचन सुनायो

رُت بسنت چھب سے پھلواری بلبل اور کہت او کہد جاری
مرگ مد چین ندر کر ڈاری کُٹل سو گندھت آنکس تمہاری
پتر پھول لے تب ہت پیارے باندھے سیت باگ کے تارے
مالن باگ اسو پے ڈارے پو شب رنگ بہو جھول سدھارے
دیکھ بھرے مد نرگس کیسے بن آسب مد ماتے جیسے
پرات سمی سن بلبل بانی مد بھاجن مکھ شبد سوانی
تیتر باز باگ رنگ بھینے پنجہ لال پھول سنگ کینے
میں مد ماتو تا دن بھائی پیو بیوگ بیٹھو سر نائی
کیونکر ملے میت من بھایو تہیں پریوا بچن سنایو

کہ بچشمان دل مبین جز دوست ہر چہ بینی بدان کہ مظہر اوست
ہیے کی آنکھن سوں لکھو میت بنا نہیں کوئی جو کچھ آوت درشٹ میں سو روپ ہر ہوئی

दोहा – हियकी आंखिन सोंलखो मीत बिना नहिं कोय ॥
जो कछु आवत दृष्टि में विष्व रूप हरि होय ॥

ہر کہ عشق ترا بجان دارد ملک آفاق رایگان دارد
دلم از تیر غمزہ چشمت نظرے کن کہ صد نشان دارد
سعدی ما عجب سبکبار است کہ بعشاق سر گران دارد

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

گرچہ ما جرم بے عدو داریم | یار ما لطف بیکراں دارد
ہیچگہ دل بدلبرے ندہد | آنکہ او چو تو دلستاں دارد
سر خود را اگر فدا سازی | بر سر دوست کے زیاں دارد
طالبِ بارِ بزم ہمدیاں | سالہا سر بر آستاں دارد
تُرک من از برائے کشتنِ من | درمیاں تیغ خونفشاں دارد
ہر کہ او جز یکے نمیداند | ایں دو مصراع بر زباں دارد

जो तुम प्रेम प्रान सम जाने । राज जगत को बृथा सुमाने ॥
हिय मेरो तुव दृग सर परसे । देख अनेक घाव उर दरसे ॥
अति हीछुद्र हमारो ज्ञानी । चाहत हारन पे भूतानी ॥
जो पे मो में पाप घनेरे । मीत हमारे कबहुं न हेरे ॥
कोई और सों मन न लगावे । तुम सो मन भावन जो पावे ॥
अपनो सिर नोछावर कीजे । मीत दृष्टि में कछु न पतीजे ॥
बरसन मीत सभा अभिलाषे । चन्द्र बदन दहरी सिर राखे ॥
मो प्यारो मम मारन वारी । राखत म्यान निकट तरवारी ॥
जो कोइ एक रूप ही जाने । यही दोहरा कंठ बखाने ॥

جے تم پریم پران سم جانے | راج جگت کو برتھا سُوماںے
ہیہ میرو تب درگ سر پرسے | دیکھ انیک گھاؤ اُر درسے
اَتی چھُودر ہمارو گیانی | چاہت ہارن پے بھرو تانی
جو پی مو میں پاپ گھنیرے | میت ہمارے کبھوں نہ ہیرے
کوئی اور سون من نہ لگاوے | تم سو من بھاون جو پاوے
اپنو سر نوچھاور کیجے | میت درشٹ میں کچھ نہ پتیجے

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

برسن ہیت سبھا ابھلا کھے   چندر بدن ڈہری سر راکھے
مو پیا رو مم مارن باری   راکھت میان نکٹ تلواری
جو کوئی ایک روپ ہو جانے   وہی دوہرہ کنٹھہ بکھانے

که بچشمانِ دل مبین جز دوست   ہر چہ بینی بداں کہ مظہر اوست
ہئے کی آنکھن سوں لکھو میت بنا نہیں کوئی   جو کچھ آوت درشٹ میں بسو روپ ہر ہوئی

दोहा–हिय की आंखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥
जो कछु आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

قرب او را وصال میگویند   وصل او را محال میگویند
چہرہ اش را چو ماہ می بینند   ابروش را ہلال میگویند
داغ سوز شرار سینۂ ماست   بر رخش آنکہ خال میگویند
جرعہ نوشان بادۂ لعلش   جام جم را سفال میگویند
خط نویساں دہان و زلفش را   بغلط میم و دال میگویند
مسندِ شاہ را گدا یانش   پائے صفت نعال میگویند
ناقصاں دستگاہ دنیا را   پائگاہِ کمال میگویند
قصۂ نا قبول و قول قبیح   روز و شب قیل و قال میگویند
صوفیاں در رہِ صفا ہردم   از سر وجد و حال میگویند

निकट वास उहि मिलवो सोई। मिलवो वाको कठिन सो होई
वा मुख पूरन चंद बखाने। द्वितिया को शशि भौंह सुजाने ॥
बिरह दाग मम हिय पर गयो। प्यारे के मुख सो तिल भयो ॥
उहि अधरन मद पीवन हारे। जम जामहि ठिकरी निरधारे
आनन अलक सुलेखक गावें। मीम दाल सी वृथा बतावें ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सिंहासन महाराजन केरे । साधू जन पग पोछन हेरे ॥
खोटे जन धन को बड़ माने । पूरन गुन जग धन को जाने ॥
खोटी बातें जगत कहानी । तिन ही में निसदिन रति बानी ॥
साधु सदा सत मारग धावें । प्रेम मगन ह्वै बचन सुनावें ॥

نکٹ باس اوہی مل سوئی — ملیہ واکو کٹھن سو ہوئی
واکھ پورن چند بکھانے — دوتیا کو ششی بہو بہ سو جانے
برہ داگ مم ہیہ پر گیو — پیارے کے مکھ سو تل بھیو
اوہی ادھرن مد پیون ہارے — جم کے جاہی ٹھکری بر دھارے
آنن الک سو لیکھک گاویں — میم دال سو برھقا بتاویں
سنگھاسن مہاراجن کےرے — سادھو جن پگ پوچھن ہیرے
کھوٹے جن دھن کو بڑ مانے — پورن گن جگ دھن کو جانے
کھوٹی باتیں جگت کہانی — تن ہی میں نس دن رت بانی
سادھو سدا ست مارگ دھاویں — پریم مگن ہہ بچن سناویں

کہ بچشمانِ دل مبیں جز دوست — ہر چہ بینی بداں کہ مظہر اوست
ہیے کی آنکھن سوں لکھو میت بنا نہیں کوئی — جو کچھ آوت درشٹ میں بسو روپ ہر ہوئی

दोहा – हिय की आँखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥
जो कछु आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

ہر کرا مایۂ یقیں باشد — دیدۂ او خدای بیں باشد
خاتمِ ہمت بلندش را — مہرۂ آسماں نگیں باشد
غیرِ حق کس نباشدش منظور — نظرِ عارفاں چنیں باشد
میرسد عاقبت بہ عیشِ مدام — ہر کہ اودائما حزیں باشد

بادشاہ جمشید نے ایک پیالہ بنایا تھا جس سے آیندہ کے حالات معلوم ہوتے تھے۔

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मोहि देखि तिज निकट बुलायो। चाहत दियो प्रसाद सुहायो ॥
बिस्मय भयो मूर्छित होही । संज्ञा देह रही नाहिं मोही ॥
नहिं जानों अचरज ततकाला 1 किन दीनो संदेश बिशाला ॥

کال رات حمام رسدھارو　　دیکھو تہاں ایک میں پیارو
چپل منوہر ندر سو اوجّل　　چندا بدن پنکج تن کومل
سُڈول سو تن شُبھ مہک چمیلی　　گربی نٹھور مطلبی میلی
اَت کوسیل نر پیڑا کاری　　مَست نین مد پیئے سوبھاری
کہوں چرچا میں بن بت باتیں　　رس سنگھار ادھک کوتاتیں
پریمن پرگٹ کیو ہے سبھرم　　اَتن الک دھرم اور ادھرم
موہی دیکھ نج نکٹ بلایو　　چاہت دیو پرساد سوہایو
بسمے بھیو مورچھت ہوہی　　سنگیا دیہی رہی نہیں موہی
نہیں جانو اچرج تت کالا　　کن دینو سندیس بسالا

کہ بچشمان دل مبیں جز دوست　　ہرچہ بینی بداں کہ مظہر اوست
ہئے کی آنکھن سوں لکھ میت بنا نہیں کوئی　　جو کچھ آوت درشٹ میں بسو روپ ہر ہوئی

दोहा- हिय की आंखिन सों लखो मीत बिना नहिं कोय ॥
जो कछ आवत दृष्टि में विश्व रूप हरि होय ॥

॥ छप्पै ॥

कीनो पूरन ग्रंथ कृपा जगदीश्वर स्वामी ॥
बरनो आलम तत्व अखिल जग अंतर जामी ॥
सरगुन निरगुन रूप एक बहु बिधि कहि गायो ॥
भयो मनोरथ सिद्ध अधिक आनंद पुर छायो ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बलदेव सुकबि प्रेमी सुबुधि ते याके स्वादहि लहैं ॥
ते सकल चराचर जगत कों विश्व रूप दरशन कहैं ॥

सोरठा– श्री गुरुदेव दयाल परम कृपा जापै करैं ॥
पावै बुद्धि विशाल निपट निकट जगदीश हरि ॥

दोहा– तुम मोमे निसदिन बसो मैं तो परम असाधु ॥
जो कठोर बानी कही सो क्षमियो अपराध ॥

॥ इति श्री ज्ञान प्रकाश सम्पूर्णम् शुभं ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

پدماوت بھاکھا مترجم

ملک محمد جائسیؒ کی ذات کسی تعارف کی محتاج نہیں ہے اور اُن کی کتاب 'پدماوت بھاکھا' ایک نہایت مشہور کتاب ہے۔ ملک محمد جائسیؒ نے اپنی اس کتاب میں قصہ کے پیرایے میں مسائل تصوف کو خوب ہی حل کیا ہے اور آخر کتاب میں قصہ کا خلاصہ بیان کر کے اخلاقی نصیحت ایک نہایت مؤثر پیرایے میں کی ہے۔ یہ کتاب اگرچہ اس سے پہلے مختلف مطابع میں چھپی مگر جیسا ترجمہ بامحاورہ اور اصل کی تصحیح اس مرتبہ کی گئی ہے اس سے زیادہ ممکن نہ تھی۔ اس کا ترجمہ جناب 'پنڈت بھگوتی پرشاد پانڈے' نے حسن قابلیت سے کیا ہے وہ دیکھنے سے تعلق رکھتا ہے۔ یہ کتاب عرصہ سے نایاب تھی اب چھپ کر تیار ہو گئی ہے اور قیمت صرف دو روپیہ (عگر) ہے جلد طلب فرمائیے ورنہ طبع ثانی کا انتظار کرنا پڑے گا۔

المشتہر

منیجر نول کشور پریس صیغہ بکڈپو لکھنؤ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक नई चीज़

सच्चा तर्जुमा वेदांत ग्रन्थ फ़ारसी मासुक़ीमां का हिंदी व्रजभाषा पद्य में सन् १६१६ में हज़ारों अनुवादों में से छाँट-कर नवाब साहब बहादुर रियासत रामपुर रुहेलखंड की आज्ञा-नुसार प्रकाशित किया गया—जिसके इनाम में प्रसन्न होकर एक बहुत बड़ा बाग़ आम का बख़्शा गया—

•o••o••o••o••o••o••o••o•

لفظ بہ لفظ مامقیمان ویدانت کا ترجمہ

جو ھزارھا ترجموں سے منتخب کر کے سمبت 1919 میں حسب خواھش جناب نواب صاحب بہادر بالقابہ والی ریاست رامپور روھیلکھنڈ یو پی جو بغرض افادۂ عام کیا گیا— جسکے انعام میں خوش ھو کر ریاست سے ایک قطعہ باغ وسیع انبہ کا عطا کیا گیا

Printed by K. D. Seth, at the N. K. Press, Lucknow.

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative